मनोहर चमोली 'मनु'

जलाधारित बाल कहानी : है जल तो है कल

गर्मियों के दिन थे। जलधर नल के नीचे नहा रहा था। नीरा ने जलधर से पूछा-"अंकल नमस्ते। नेहा कहां है? किताबों की प्रदर्शनी लगी है। हमें जाना था।" जलधर ने पूरी बाल्टी का पानी सिर पर डालते हुए कहा-"नमस्ते। वो तो तैयार बैठी है। शायद तेरा ही इंतजार कर रही है।" नीरा ने मुंह पर हाथ रखते हुए जलधर से कहा- "अरे! अरे! अंकल आप यह क्या कर रहे हो? "जलधर ने नीरा को घूर कर देखा। फिर एक के बाद एक जग से बदन पर पानी डालते हुए बोला- "देख नहीं रही है नहा रहा हूं। दर्जनों बाल्टी पानी डाल चुका हूं। लेकिन गर्मी है कि दूर ही नहीं हो रही है। तू यहां से जा। नेहा अंदर ही है।"

नीरा ने हाथ से इशारा करते हुए कहा- "यह तो मैं भी देख रही हूं। तभी तो पूछ रही हूं कि यह क्या कर रहे हो। जब गर्मी है तो गर्मी ही लगेगी। मेरे सामने ही आप दस-बारह लीटर पानी बेकार में बहा चुके हो? इतने पानी में तो हमारे घर के सभी सदस्य तीन दिन नहा लेंगे। जितना पानी आप अपने सिर पर डाल चुके हो उतने पानी से तो हजारों पक्षियों का नहाना हो जाएगा। चलो आप पहले कपड़े पहनकर अंदर आओ। तब बात करेंगे।" जलधर का हाथ हवा में ही रूक गया। उसने हाथ में पकड़े मग को बाल्टी में रख दिया। नल का पेंच खुला था। नल के नीचे रखी बाल्टी भर चुकी थी और पानी बाल्टी से नीचे गिर रहा था।

नीरा बोली- "और ये देखो पेंच खुला है पानी बेकार बह रहा है। पहले नल का पेंच तो बंद कीजिए।" जलधर दांत पीसते हुए बोला- "अच्छा री तू अंदर तो जा। मैं अभी बंद करता हूं पेंच भी रे"। जलधर ने पेंच को कस कर बंद कर दिया। नीरा अंदर चली गई। जलधर ने कपड़े बदले और भीतर आ गया। नीरा नेहा से कह रही थी- "हद है, तू तो अंकल को समझा सकती है।" जलधर बीच में ही बोल पड़ा- "मैं बच्चा नहीं हूं जो मुझे समझाया जाए। हां अब बोल क्या कहना है?"

नीरा ने कहा- अंकल अब क्या बोलना है। नहाने के लिए आपको पहले से ही पानी सामने रखना चाहिए। नल का पानी कितना बेकार में ही बहा दिया। बदन में बाल्टी पर बाल्टी उड़ेलने को नहाना कहते हैं?" जलधर नेहा की ओर देखते हुए बोला- "एक मेरे अकेले पानी बहाने से क्या फर्क पड़ता है। किस-किस को रोकोगी तुम?"

नीरा ने कहा- "फर्क तो पड़ता

यूं न करें जल बर्बाद

स्कूली बच्चों को जल संगोष्ठियों और पुस्तक प्रदर्शनियों के माध्यम से जल संरक्षण के प्रति जागरूक करना

है अंकल बहुत फर्क पड़ता है।" जलधर ने पूछा- "क्या मतलब?" अब नेहा बोली- "मतलब यही है पापा कि आपके जैसे कई होंगे जो नहाने के बहाने ढेरों लीटर पानी बहा देते हैं। वहीं कईयों को पीने का पानी तक नहीं मिल पाता।" यह सुनकर जलधर हसंने लगा। कहने लगा- "अच्छा तो अब तू भी मुझे लेक्चर देने लगी! तुम दोनों बच्चे हो उम्र में बहुत छोटे हो। लेकिन लगता है कि तुम दिमाग से भी छोटे हो। हमारे यहां कुएं हैं। हैंडपंप हैं। ट्यूबवेल हैं। नदी है। दिक्कत कहां है?"

नीरा बोली- "दिक्कत ही तो है। क्या आपको नहीं पता है कि बिन पानी सब सून। अंकल आबादी लगातार बढ़ती जा रही है। हम भूजल का लगातार और अधिक से अधिक उपयोग कर रहे हैं। भारत की आधी आबादी भूजल के स्रोतों पर निर्भर है।" जलधर जोर-जोर से हंसने लगा- "ये लो। कर लो गल। अब जल तो जल है। चाहे भूजल हो या कोई और। क्या फर्क पड़ता है?" जलधर आराम से बैठ गया। नीरा ने कहा- पीने योग्य पानी तो संरक्षित होगा। खुद को ही देख लो। आप बजाए नदी में नहाने के नल के पानी से नहा रहे हैं। यह पानी तो पीने योग्य है। इसे बेकार में क्यों बहाए जा रहे हो? यह भूमि के भीतर के जल का दोहन कर घर-घर पहुंचाया जाता है।"

जलधर कुर्सी पर उछलकर बैठ गया। नेहा की ओर देखते हुए बोला- "ओह! अरे! हां ये तो मैने सोचा ही नहीं।" नीरा बोली- "तो अंकल। अब सोचो। पता है कि आज भी हमारे देश में नलों का पानी सभी को उपलब्ध नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों की सत्तर फीसदी आबादी को नल का पानी उपलब्ध नहीं है। वहीं तीस फीसदी शहरी आबादी को भी नल का पानी उपलब्ध नहीं है। यही नहीं कुल मिलाकर देखें तो आज भी सौ में से ग्यारह लोग कुओं का पानी पीने को मजबूर हैं। सौ में से बयालीस आदमी हैंडपंप और ट्यूबवेल के पानी पर निर्भर हैं।"

जलधर बोला- "अरे! तो इसका मतलब यह है कि हर घर में अभी पानी नहीं पहुंचा है?" एक फीसदी पानी ही तो पीने योग्य है। अब आप ही बताओ। क्या हमें पीने के पानी को इस तरह नालियो में बहाना चाहिए? नहीं न?" जलधर ने सिर पकड़ लिया। फिर बोला- "गलत कह रही हो तुम दोनों पीने का पानी ही क्यों? किसी भी तरह का पानी बेकार में नहीं बहाना चाहिए। तुम दोनों ने तो आज मुझे बहुत ही जरूरी बात बताई मैं तो आज सुबह से ही नहा रहा हूं। रोज ही नहाता हूं। खुले में नहाता हूं। कई सामने से गुजरे लेकिन किसी ने मुझे समझाने की कोशिश नहीं की।" नेहा हंसते हुए कहने लगी- "मैं तो कई बार आपको मना करती हूं। आप ही डांट देते हो। आप ही तो कहते हो कि बच्चे बड़ों को टोका नहीं करते।"

नल का पानी न उपलब्ध होने के कारण लोग कुओं और हेंडपम्पों का पानी पीने को विवश

जलधर ने बात बदलते हुए कहा- "अच्छा ये तो बताया नहीं कि तुम इस दुपहरी में जा कहां रहे हो?" नेहा ने कहा- "जलविभाग की गोष्ठी में जा रहे हैं। जल है तो कल है। वहां जलआधारित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगी है।"

जलधर एकदम बोल पड़ा- "तुम दोनों नहीं जाओगे।" नीरा बोली- "नहीं जाएंगे! लेकिन क्यों?" जलधर बोला- "वो इसलिए कि मैं भी चलता हूं।" जलधर हंसने लगा। नेहा के साथ-साथ नीरा भी हंसने लगी। जलधर भी दोनों के साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

संपर्क करें:
मनोहर चमोली 'मनु'
पोस्ट बॉक्स-23, भितांई, पौड़ी,
पौड़ी गढ़वाल-246001 उत्तराखंड
मो.न.: 09412158688
ईमेल: chamoli123456789@gmail.com